हमारी बात

'सबला' पत्रिका जितनी औरतों के लिए पढ़ने योग्य है उतनी ही या उससे भी अधिक पुरुषों के लिए है। रूढ़ियों की जकड़ कम करने और बेटियों-बहुओं के साथ बेइंसाफी व जुल्म खत्म करने में पुरुषों का भारी योगदान होना चाहिए। स्त्रियों को ही बार-बार यह बताते रहने से कि उन्हें अपने हक पाने के लिए जूझना होगा, काफी नहीं है। वे अपने हकों के प्रति जागरूक हो जाती हैं, पर उन्हें पाने में बहुधा असमर्थ रहती हैं, यदि पुरुष उनका साथ न दें।

प्रेरक भाइयों से हमारा सविनय अनुरोध है कि वे एक पखवाड़े में एक बार अवश्य अपने क्षेत्र के नव-साक्षर पुरुषों व समूचे ग्राम समाज के पुरुष वर्ग की मीटिंग बुलाएं। उसमें 'सबला' में छपे लेखों पर चर्चा करें। तभी चेतना जागेगी और समस्याओं के निराकरण के रास्ते निकलेंगे।

मिसाल के तौर पर अप्रैल-मई के अंक में 'हमारी बेड़ियां' लेख छपा था। यदि वह पत्रिका के पन्नों में ही कैद रहा तो उसका क्या लाभ? कोदरी बाई थोड़ी सी तकलीफ़ का इलाज कराने गई थी और एक अज्ञानी भोपा के चक्कर में पड़ कर अपनी जान गंवा बैठी। पर क्या यह हादसा केवल एक गांव की कोदरी बाई का है? नहीं। गांव-गांव में झाड़-फूंक करने वाले भोपा अपने अखाड़े जमाए बैठे हैं और निरंतर भोले ग्रामवासियों को ठग रहे हैं। उनका जीवन खतरे में डाल रहे हैं।

पिछले अंक में ही एक अन्य लेख 'पारिवारिक हिंसा' में लड़की के जन्म से उसकी आखिरी सांस तक उसके साथ होते दुर्व्यवहार की तस्वीर खींची गई थी। यदि पुरुष दुर्व्यवहार खत्म करने पर आमादा हो जाए तो कोई मां, सास, ननद, बेटी व बहू को सता नहीं पाएगी।

पुरुषों के लिए चुनौती है कि इस मुहिम पर मजबूत मोर्चा गाढ़ दें और अपनी बेटी व बहू को सम्मान का दर्जा दिलाने का साहसिक कदम उठाएं। इसी आशय से हमने पिछले अंक में "पुरुष पाठकों के नाम एक पत्र" शीर्षक से एक लेख भी छापा था। ऐसे लेख हर अंक में छापे जाएंगे। पुरुष और स्त्री परिवार की गाड़ी के दो पहिये हैं, यह कहते और सुनते कान पक जाते हैं। आज हम पुरुष वर्ग का आह्वान कर रहे हैं कि वे इस सूक्ति को सार्थक बना दें ताकि परिवार और समाज की गाड़ी लीक छोड़ कर सरपट दौड़ने लगे।

स्त्रियों में सृजनात्मक शक्ति की कमी नहीं। उनमें मुसीबतों को झेलने की शक्ति पुरुषों से शायद अधिक ही है। तब उनके सामर्थ्य और उनकी प्रतिभा का भरपूर उपयोग क्यों न हो? स्त्रियां आगे बढ़ना चाहें और पुरुष उनका रास्ता रोकें तो परिवार की गाड़ी का रुक जाना स्वाभाविक है। पर यदि पुरुष रास्ता न रोक कर उन्हें बढ़ावा दें तो परिवार का बोझ उठाने में पुरुषों को अधिक योगदान ही मिलेगा।

यदि 'सबला' पत्रिका के माध्यम से पुरुष वर्ग में यह चिंतन बढ़े कि स्त्रियों के हकों की लड़ाई पुरुषों की भी लड़ाई है तो परिवार व समाज में सौहार्द्र बढ़ेगा। स्त्रियों की योग्यता का पूरा लाभ समाज को मिलने लगेगा। उसी में 'सबला' की सार्थकता होगी और प्रेरक भाई सराहना के पात्र बनेंगे।

ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन